सोनम कपूर ने आयशा के 15 साल पूरे होने पर जताई खुशी

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनम कपूर ने अपनी फिल्म आयशा के प्रदर्शन के 15 साल पूरे होने पर खुशी जतायी है. सोनम कपूर की फिल्म आयशा ने आज अपनी रिलीज़ के 15 साल पूरे कर लिए हैं. यह फिल्म 06 अगस्त 2010 को रिलीज़ हुई थी.यह रिया कपूर की एक निर्माता के रूप में पहली फिल्म थी. इस फिल्म में अमृता पुरी, इरा दुबे और सोनम कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे, और इसका निर्देशन राजश्री ओझा ने किया था.

सोनम कपूर ने फिल्म आयशा को याद करते हुए कहा,जब हम आयशा बना रहे थे, तब हमारे मन में कोई संस्कृति को प्रभावित करने% का इरादा नहीं था. हम दो लड़कियां थीं जो एक ऐसी फिल्म बनाना चाहती थीं जैसी हम खुद देखना चाहती थीं, और जो बॉलीवुड उस समय हमें नहीं दे रहा था. लोगों ने इसे महसूस किया और हमें यह बताया कि आयशा उस समय के युवाओं के लिए एक पीढ़ी-निर्धारित फिल्म बन गई.

सोनम कपूर ने कहा,हम शुरू से जानते थे कि हम फैशन के साथ खेलना चाहते हैं, उसे कूल बनाना चाहते हैं लेकिन साथ ही एक्सेसिबल भी. हमें फैशन पसंद था, हमें पता था कि हर कोई उसमें रुचि रखता है लेकिन इससे पहले कोई फिल्म इतनी फ्रंट-फुटेड नहीं थी जो फैशन को केंद्र में रखे. हमें नहीं पता था कि आयशा भारतीय सिनेमा या युवाओं की मानसिकता और पॉप कल्चर पर कैसा प्रभाव डालेगी.

सोनम कपूर ने कहा, आयशा ने बॉलीवुड में पहली बार यह बदलाव लाया कि फैशन सिर्फ बैकग्राउंड का हिस्सा नहीं था, बल्कि वह कहानी का हिस्सा था. इसने मेनस्ट्रीम में स्टाइल और सेल्फ-एक्सप्रेशन पर चर्चा छेड़ी, कुछ ऐसा, जिसे मैं हमेशा से सपोर्ट करती रही हूं.

सोनम ने कहा,आयशा आज भी मेरे दिल के बेहद करीब है और मेरी पीढ़ी की हर लड़की के लिए खास है. उसका किरदार हर उस युवती का प्रतिनिधित्व करता है जो खुद को खोज रही होती है, बिंदास, आत्मनिर्भर लेकिन साथ ही इमोशनल और अपूर्ण और प्यार की तलाश में. शायद यही वजह है कि आयशा आज भी पॉप कल्चर, वार्डरोब और दिलों में जिंदा है और यही हमारे लिए सबसे बड़ा गिफ्ट है.

राखी और बदलते रिश्तों की डोर...

सुचिता साकुनिया
लेखिका

बहना ने भाई की कलाई से प्यार बाँधा है,
रेशम की डोरी
रेशम की डोरी से संसार बाँधा है...

कितना सुंदर और निश्छल होता है भाई-बहन का यह रिश्ता. एक पतली-सी डोरी में बँधी होती हैं न जाने कितनी भावनाएँ - रक्षा, प्रेम, तकरार और जीवनभर का साथ.

पर अफ़सोस, आज की इस चकाचौंध और दिखावे की दुनिया में ये रेशम की डोरी भी महंगी ब्रांडेड राखियों में, भावनाएँ महंगे गिफ्ट्स में, और प्यार - सोशल मीडिया पोस्ट्स में खोने लगा है.

हाल ही में मैंने अपनी कुछ सहेलियों को राखी की शॉपिंग करते देखा. पर उनकी खुशी कम और चिंता ज़्यादा थी. पूछने पर पता चला कि उन्हें इस बार की थीम के अनुसार राखी, डेकोरेशन और गिफ्ट्स नहीं मिल पा रहे. थीम? मैंने चौंककर पूछा. तो जवाब मिला - हाँ! हर साल थीम तय होती है. अगर इस बार पीले रंग की थीम है, तो कपड़े, खाना, डेकोरेशन - सब कुछ उसी रंग में होना चाहिए. यह सुनकर पहले हँसी आई, फिर अचरज हुआ, और फिर एक टीस सी उठी मन में. त्योहारों का मतलब जब रंग, साज-सज्जा और पैसों की होड़ में सिमट जाए, तो क्या बचा रह जाता है उस मूल भावना का जो रिश्तों को जोड़ती थी? आज रेशम की डोरी हज़ारों रुपये में बिक रही है. जिस राखी की शुरुआत द्रौपदी ने अपने साड़ी के पल्लू से की थी, आज वही राखी थीम बेस्ड, डिज़ाइनर, और कस्टमाइज़्ड बनकर दिखावे का माध्यम बन गई है.

कभी राखी का त्योहार मोहल्ले भर का हुआ करता था. बुआ, मामा, पड़ोसी - सबको राखी बाँधते थे. सिर्फ खून का रिश्ता ही नहीं, दिल का रिश्ता बाँधने का दिन होता था. पर आज रिश्ते भी सोशल मीडिया की फ्रेंडलिस्ट तक सीमित हो गए हैं. अब सगे भाई-बहन भी इस आडंबर से घबरा कर कतराने लगे हैं. त्योहार अब सौंदर्य प्रदर्शन बनते जा रहे हैं. सादगी और आत्मीयता की जगह प्रतियोगिता ने ले ली है. कौन सी राखी महंगी है, किसका गिफ्ट बेहतर है - इन्हीं मापदंडों पर रिश्ते तौले जा रहे हैं. मैं यह नहीं कहती कि सजावट या उत्सव मनाना गलत है. लेकिन जब दिखावे के बोझ तले भावनाएँ दबने लगें, तो सोचना होगा कि हम अगली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं?

आइए, इस बार राखी पर दिखावे से थोड़ा हटें. महंगे गिफ्ट्स की जगह वक्त और प्यार दें. सजावट की जगह सादगी को अपनाएँ. और उस डोर को मज़बूत करें जिसमें बँधे हैं बचपन की यादें, भरोसा और अपार स्नेह. क्योंकि एक दिन हमारी अगली पीढ़ी भी राखी बाँधेगी... और वो वही तरीका अपनाएगी जो हमने उन्हें दिखाया है.

पिता के सपने को पूरा करने बनाई फ़िल्म

जानेमाने फिल्मकार ओम राउत का कहना है कि उन्होंने अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिये इंस्पेक्टर ज़ेंडे पर फ़िल्म बनायी है.

70 और 80 के दशक की मुंबई की संकरी गलियों में, जब कुख्यात स्विमसूट किलर तिहाड़ जेल से फरार हो जाता है, तो एक जांबाज़ पुलिस अफसर उसे पकड़ने की ठान लेता है. सच्ची घटना से प्रेरित यह कहानी जज़्बे और हिम्मत की है, जो एक रोमांचक बिल्ली-चूहे के खेल में बदल जाती है. नेटफ्लिक्स की नई क्रिर्की ड्रामा 'इंस्पेक्टर ज़ेंडे' 05 सितंबर को रिलीज़ हो रही है.इस फ़िल्म में बहुमुखी अभिनेता मनोज बाजपेयी इंस्पेक्टर मधुकर ज़ेंडे की भूमिका में हैं, वहीं जिम सारभ चालाक ठग और कुख्यात स्विमसूट किलर कार्ल भोजराज का किरदार निभा रहे हैं. फ़िल्म का निर्देशन और लेखन चिन्मय डी. मांडलेकर ने किया है. इसके साथ भालचंद्र कदम, सचिन केदकर, गिरीजा ओक और हरीश दूधाडे भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे.

निर्माता ओम राउत ने कहा, इंस्पेक्टर ज़ेंडे की कहानी ऐसी है जिसे देखा जाना चाहिए, याद रखा जाना चाहिए और सेलिब्रेट किया जाना चाहिए. यह एक बेहद दिलचस्प और प्रेरणादायक केस की कहानी है, और सबसे अहम बात ,यह मेरे पिता का सपना था कि इंस्पेक्टर ज़ेंडे पर एक फ़िल्म बने. नेटफ्लिक्स के साथ इस कहानी को पर्दे पर लाना एक शानदार सफर रहा है.

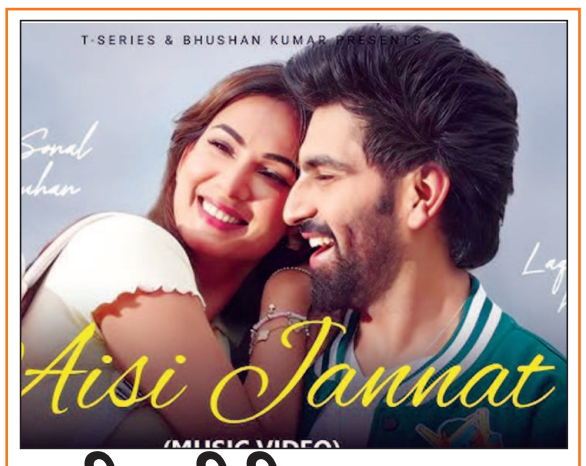

टी-सीरीज़ प्रस्तुत 'ऐसी जन्नत' रिलीज

भूषण कुमार और टी-सीरीज़ प्रस्तुत गाना 'ऐसी जन्नत' रिलीज हो गया है.

गाना ऐसी जन्नत को लक्ष्य कपूर ने गाया है. गाने का संगीत मीत ब्रदर्स ने दिया है और इसके बोल यंगवीर ने लिखे हैं .इस वीडियो में सोनल चौहान नजर आ रही हैं, जिन्हें उनकी डेब्यू फिल्म जन्नत के लिए आज भी याद किया जाता है. इस बार वह लक्ष्य कपूर के साथ एक नई और प्यारी केमिस्ट्री साझा करती नज़र आती हैं. दोनों कलाकार इस गीत की भावनाओं को मासूम और सादे प्यार के पलों के ज़रिए जीवंत करते हैं.

सोनल चौहान ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा,जब मैंने पहली बार 'ऐसी जन्नत' सुना, तो इसकी मेलोडी और सच्चाई से मैं तुरंत जुड़ गई. लक्ष्य के साथ काम करना बहुत अच्छा अनुभव था.उनकी आवाज़ में गहराई और भावना है. टी-सीरीज़ के साथ दोबारा काम करना भी बहुत अच्छा लगा, जो हमेशा संगीत को खूबसूरती से पेश करते हैं.

लक्ष्य कपूर ने कहा,'ऐसी जन्नत' मेरे दिल के बेहद करीब है. यह गाना पुराने ज़माने के सच्चे प्यार की बात करता है. सोनल के साथ काम करना बहुत आसान और प्यारा रहा, और मैं भूषण कुमार सर और टी-सीरीज़ का आभारी हूं कि उन्होंने मुझ पर और इस गाने पर विश्वास किया.

'ऐसी जन्नत' अब टी-सीरीज़ के यूट्यूब चैनल पर और सभी प्रमुख स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है.

सरदार जी 3 की रिलीज पर वाणी कपूर ने रखी राय

पाकिस्तानी कलाकार फवाद खान के साथ वाणी कपूर की फिल्म %अबीर गुलाल% इस साल पहलगाम हमले की वजह से रिलीज नहीं हो सकी. इस मामले के बाद दिलजीत दोसांझ की फिल्म %सरदार जी 3%, जिसमें पाकिस्तानी कलाकार हानिया आमिर भी हैं को विदेशों में रिलीज किया गया. फिल्म की रिलीज पर काफी हंगामा हुआ. इसके बहिष्कार की मांग की गई. हाल ही में एक बातचीत में वाणी कपूर ने सरदार जी 3 का बचाव किया है.एनडीटीवी से बातचीत में वाणी कपूर ने कहा %मुझे याद है कि यह फिल्म पहलगाम हमले से पहले शूट की गई थी. ऐसे में मुझे लगता है कि अगर फिल्म रिलीज नहीं होगी तो निर्माता के पैसे फंस जाएंगे. मुझे लगता है कि इस फिल्म को बनाने में 100 से ज्यादा लोग लगे थे. जब फिल्म की शूटिंग हो रही थी तब हालात दूसरे थे.वाणी कपूर ने आगे कहा मुझे नहीं लगता कि उनका मकसद देश की बेहुरमती करना था. वह एक वैश्विक स्टार हैं. उन्हें विश्व स्तर पर देखा जाता है. उन्हें जो ठीक लगा उन्होंने वैसा काम किया. मुझे लगता है कि इससे कोई भी कानून नहीं टूटा है.

कलाकारों ने बताये अपने फेस्टिव शॉपिंग प्लान्स!

त्योहारी सीज़न आने वाला है और इसका उत्साह हमारे साथ-साथ हमारे पसंदीदा टीवी सितारों में भी साफ़ दिख रहा है! शूटिंग के बिज़ी शेड्यूल और त्योहारों से जुड़े खास एपिसोड्स के बीच एण्डटीवी के एक्टर्स थोड़ी राहत के लिए शॉपिंग का मज़ा ले रहे हैं. चाहे पारंपरिक कपड़े हों, स्टाइलिश ज्वेलरी, अनोखा होम डेकोर या अपनों के लिए प्यारे तोहफे-इनकी शॉपिंग लिस्ट पूरी तरह त्योहारों के रंग में रंगी हुई है. इन कलाकारों में शामिल हैं-नीहारिका रॉय ('घरवाली पेड़वाली' की सावी), गीतांजलि मिश्रा ('हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश) और विदिशा श्रीवास्तव ('भाबीजी घर पर हैं' की अनीता भाबी).

शो 'घरवाली पेड़वाली' में सावी का किरदार निभा रहीं नीहारिका रॉय कहती हैं, त्योहारों का वक्त मुझे सबसे ज्यादा पसंद है. हर बार सोचती हूं कि इस बार सबकुछ सिंपल रखूंगी, लेकिन दिमाग

में विशलिस्ट खुद-ब-खुद बढ़ती जाती है. गीतांजलि मिश्रा कहती हैं, त्योहारों का ये मौसम मेरे दिल को बीते लम्हों की यादों और नए जोश से भर देता है.

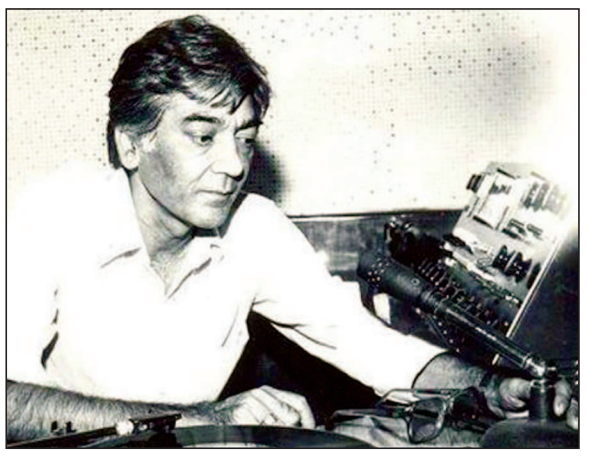

भावपूर्ण गीतों से दीवाना बनाया गुलशन बावरा ने

बॉलीवुड में गुलशन बावरा को एक ऐसे गीतकार के तौर पर याद किया जाता है, जिन्होंने अपने भावपूर्ण गीतों से लगभग तीन दशकों तक श्रोताओं को अपना दीवाना बनाया.

हिन्दी भाषा और साहित्य के करिश्माई व्यक्तित्व गुलशन कुमार मेहता उर्फ गुलशन बावरा का जन्म 12 अप्रैल 1937 को लाहौर शहर के निकट शेखपुरा में हुआ था.महज छह वर्ष की उम्र से हीं उनका रूझान कविता लिखने की ओर था. उनकी मां विधावती धार्मिक कार्यकलापों के साथ-साथ संगीत में भी काफी रूचि रखती थी. वह अक्सर मां के साथ भजन, कीर्तन जैसे धार्मिक कार्यक्रमों में जाया करते थे.

देश के विभाजन के बाद हुए सांप्रदायिक दंगों में गुलशन के माता-पिता की हत्या उनकी नजरों के सामने ही हो गई. इसके बाद वह अपनी बड़ी बहन के पास दिल्ली आ गए. उन्होंने अपनी स्नातक की पढ़ाई दिल्ली विश्वविद्यालय से पूरी की. कॉलेज की पढ़ाई के दौरान उनकी रूचि कविता लिखने में हो गई.अपने परिवार की घिसी पिटी परंपरा को निभाते हुए गुलशन मेहता ने वर्ष 1955 में अपने करियर की शुरूआत मुंबई में एक लिपिक की नौकरी से की. उनका मानना था कि सरकारी नौकरी करने से उनका भविष्य सुरक्षित रहेगा. लिपिक की नौकरी उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं थी.

गुलशन मेहता ने रेलवे में लिपिक की नौकरी छोड़ दी और अपना ध्यान फिल्म इंडस्ट्री की ओर लगाना शुरू कर दिया .फिल्म इंडस्ट्री में उन्हें कई कठिनाइयो का सामना करना पड़ा .उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा और कई छोटे बजट की फिल्में भी की जिनसे उन्हें कुछ खास फायदा नही हुआ. इस बीच गुलशन की मुलाकात संगीतकार जोड़ी कल्याण जी- आनंद जी से हुयी जिनके संगीत निर्देशन में लिये गुलशन मेहता ने फिल्म सट्टा -बाजार के लिये ..तुम्हे याद होगा कभी हम मिले थे .. गीत लिखा लेकिन इस फिल्म के जरिये वह कुछ खास पहचान नही बना पाये. फिल्म ..सट्टा बाजार.. मे उनके गीत को सुनकर फिल्म के वितरक शांतिभाई दबे काफी खुश हुये . उन्हें विश्वास नही हुआ कि इतनी छोटी सी उम्र में कोई व्यक्ति इस गीत को इतनी गहराई के साथ लिख सकता है.

काजल वशिष्ठ की 'भल्ले पधार्या' के साथ सिनेमा में वापसी

वर्ष 2012 की सुपरहिट एक्शन हिट फिल्म 'राउडी राठौर' से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली अभिनेत्री काजल वशिष्ठ, अब गुजराती फिल्म 'भल्ले पधार्या' के साथ बड़े पर्दे पर लौट रही हैं.

हिंदी, दक्षिण भारतीय और मराठी सिनेमा के साथ-साथ थिएटर में मजबूत पकड़ रखने वाली काजल फिल्म 'भल्ले पधार्या' में एक अहम किरदार निभा रही हैं. यह फिल्म पारिवारिक मूल्यों, संस्कृति और भावनाओं को खूबसूरती से जोड़ती है.

काजल ने कहा, फिल्म 'भल्ले पधार्या' मेरे लिए जैसे एक पूरा साइकिल पूरा होने जैसा है. मुझे हमेशा ऐसी कहानियां पसंद रही हैं

जो लोगों के दिलों से जुड़ती हैं, और गुजराती सिनेमा में बेहद खूबसूरत भावनात्मक गहराई है.

ऋतिक और कियारा की केमेस्ट्री ने जीता लोगों का दिल

फिल्म 'वॉर 2' के गाना 'आवन जावन' में ऋतिक रोशन और कियारा आडवाणी की केमेस्ट्री ने लोगों का दिल जीत लिया है. यशराज फिल्म्स ने अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'वॉर 2' का पहला गाना 'आवन जावन' हाल ही में रिलीज किया है, जिसमें सुपरस्टार ऋतिक रोशन और कियारा आडवाणी एक साथ नजर आ रहे हैं. इस गाने में दोनों कलाकारों की जबरदस्त केमिस्ट्री दर्शकों का दिल जीत रही है. गीत की नर्म-संवेदनशील धुन के साथ-साथ उसकी खूबसूरत लोकेशन इटली के टस्कनी के शांत ग्रामीण इलाकों से लेकर रोम की रंगीन गलियों तक भी काफी चर्चा में हैं. निर्देशक अयान मुखर्जी ने गाने की पृष्ठभूमि साझा करते हुए कहा, हमें एक ऐसी जगह की तलाश थी जो इस लव सॉन्ग को एक खुशनुमा ट्रैवल एनर्जी दे सके,जहां दो लोग प्यार में हों और साथ में दुनिया घूम रहे हों. जब इटली को फाइनल किया गया, तो मैं बेहद खुश था.

कियारा आडवाणी ने लोकेशन के सकारात्मक अनुभव साझा करते हुए कहा, यहां की धूप और ठंडी हवा का मेल कमाल का है. मन करता है कि यहीं रुक जाऊं, रिलैक्स करूं और थर्मल पूल्स में तैरती रहूं. ये एकदम स्वप्निल और खूबसूरत है.

कोरियोग्राफर बॉस्को मार्टिस ने कहा, टस्कनी ने हमें बहुत ही शानदार पृष्ठभूमि दी है. यहां का विजुअल पैलेट अद्भुत है. असल में ये लोकेशन गाने को एक नया स्तर देती है.

निर्देशक अयान मुखर्जी ने रोम में फिल्माए गए हिस्सों की जटिलता के बारे में बताते हुए कहा, जब मैं रोम पहुंचा, तो मन में था कि हमें कोलोसियम, स्पेनिश स्टेप्स और ट्रेवी फाउंटेन जैसी ऐतिहासिक जगहों पर जरूर शूट करना है. इन जगहों के लिए परमिशन मिलना बेहद मुश्किल था, लेकिन किस्मत ने साथ दिया और हम वहां शूट कर सके.

फिल्म सैयारा से रातोंरात प्रसिद्ध हुई एक्ट्रेस अनीत पड्डा ने आज सोशल मीडिया हैंडल पर एक लव पोस्ट शेयर किया है. इस पोस्ट में अनीत का प्यार साफ झलक रहा है. अनीत की इस पोस्ट पर कई सेलेब्स और फैंस ने अपनी प्रतिक्रिया दी है.

आगे अनीत ने इस पोस्ट में लिखा, तुमने मुझे इतना प्यार दिया है कि वह मेरे दिल में भारी-सा लगता है. मैं समझ नहीं पा रही कि इसे कैसे लौटाऊं. मुझे डर है कि आगे क्या होगा, डर है कि मैं काफी नहीं रहूंगी. लेकिन मेरे पास जो कुछ भी है, चाहे वह छोटा-सा हिस्सा ही क्यों न हो, मैं उसे तुम्हारे सामने रख दूंगी. अगर यह तुम्हें हंसाए, रुलाए, या कुछ भूला हुआ याद दिलाए, अगर यह तुम्हें थोड़ा कम अकेला महसूस कराए, तो शायद मेरा होना सार्थक है. मैं कोशिश करती रहूंगी, भले ही अधूरी हूं, पर अपने पूरे दिल से. क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूं.अनीत के इस प्यारे पोस्ट पर बॉलीवुड एक्ट्रेस अदिति राव हैदरी ने लाल दिल वाले इमोजी बनाए हैं. वहीं टीवी एक्ट्रेस कनीका मान ने लिखा, %मैं एक प्रशंसक हूं%, अहान पांडे की मां डीन पांडे ने लिखा, यह मेरे लिए खत्म नहीं हो रहा है.. हमेशा मेरे दिल में रहेगा अनीत..लव यू, एक फैन ने लिखा, कितना प्यारा, एक और फैन ने लिखा, आप तो बस परफेक्ट से भी कहीं बढ़कर हैं, वहीं अनीत के कई फैंस ने लाल दिल वाले और फायर इमोजी बरसाए हैं.

अनीत ने किया प्यार का इजहार

शाहरुख खान की अदाकारी वाली विज्ञापन फिल्म लांच

सनफीस्ट डार्क फैंटेसी ने बॉलीवुड स्टार शाहरुख खान के अभिनय से सजी विज्ञापन फिल्म लांच की है.

सनफीस्ट डार्क फैंटेसी ने अपने चल रहे %हर दिल की स्वीट एंडिंग% अभियान के तहत शाहरुख खान की अदाकारी वाली एक दिल को छू लेने वाली नई विज्ञापन फिल्म लॉन्च की है. फिल्म उस आदत को ध्यान में रखती है कि घर हो या रेस्टोरेंट अक्सर हम खाना खाने के बाद मिठाई के रूप मे कुछ जरूर खाते हैं, लेकिन टिफिन खत्म करने के बाद ऐसा कम ही हो पाता है, बस यही इस विज्ञापन का मर्म है,ब्रांड हर टिफिन की स्वीट एंडिंग% पेश करता है.

एफसीबी उल्का द्वारा परिकल्पित, यह नई फिल्म टिफिन पैक करते समय मां द्वारा उसमें मिलाए जाने वाले प्यार और वात्सल्य को उस स्वादिष्ट भोग के साथ कुशलता से जोड़ती है जो डार्क फैंटेसी को परिभाषित करता है. जीवन के एक अंश के रूप में, हम शाहरुख खान को एक पिता की भूमिका में देखते हैं, जो अपने बेटे के साथ मिलकर टिफिन में चुपके से एक डार्क फैंटेसी कुकी रख देते हैं और फिर उन्हें एहसास होता है कि मां तो पहले ही एक कदम आगे थी. यह फिल्म जुड़ाव और खुशी के इन छोटे-छोटे पलों का जश्न मनाती है, और इस बात पर ज़ोर देती है कि डार्क फैंटेसी के साथ, एक मधुर अंत हमेशा सुनिश्चित होता है.